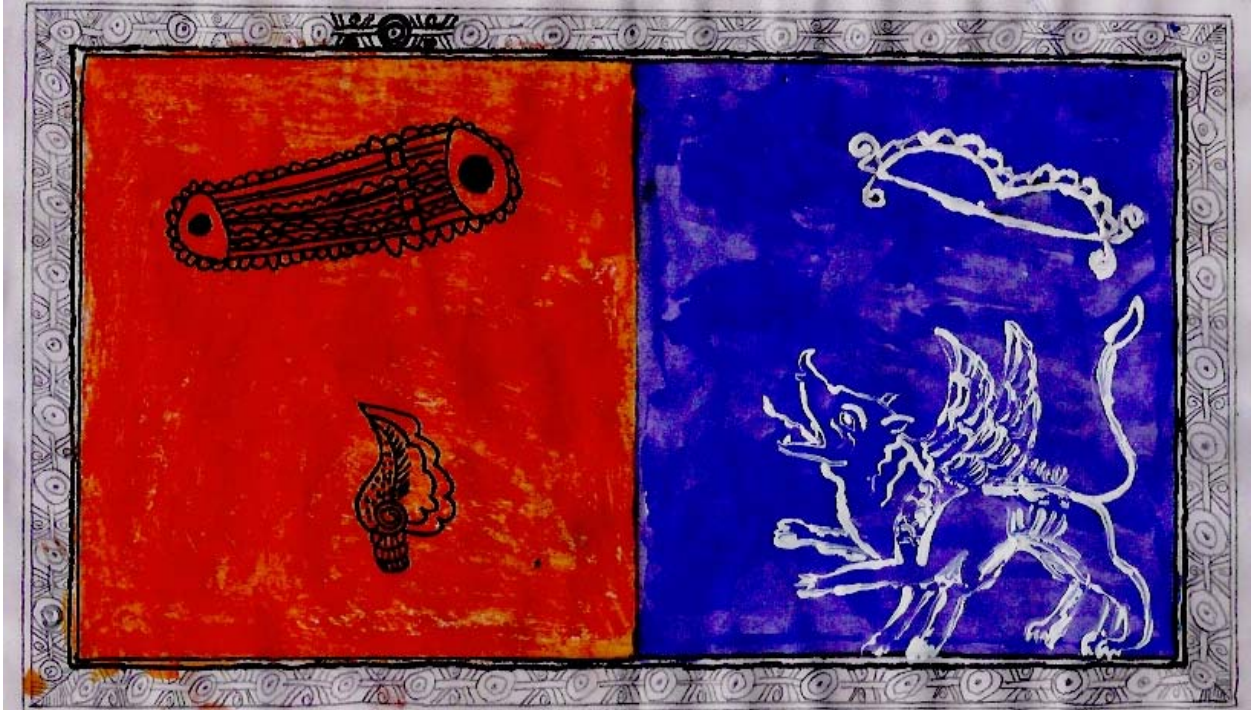




विदेह

01 अप्रैल 2008

वर्ष 1 मास 4 अंक 7





एहि अंकमे अछि:-

01 अश्विन 2008

वर्ष 1 मास 4 अंक 7

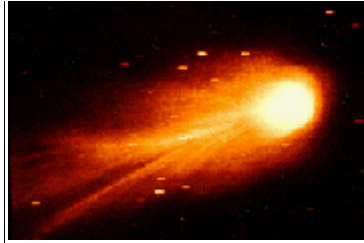
1. शोध लेख:

मायानन्द मिश्रक गतिहास रौध (आँगा)

प्रथम शिन प्वती च/ मंत्रपत्र/ प्ररोहित/ आ' म्वी-धन केव संदर्भमे

2. उपन्यास

सहस्ररौदनि (आँगा)

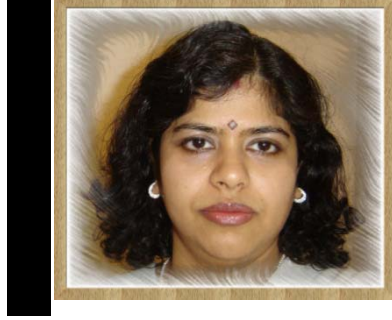


3. महाकार्य महाभावत (आँगा)

4. कथा(हम नहि जायँ रिदेशे)



5. पद्य



ज्याति या चौधवीक पद्य
रिशान सम्रद्र

थां खान करिक खन्याय करिता

खान करिक खन्याय बचना

6. संस्कृत शिक्षा

(थाँगा)

7. मिथिना कना- चित्रकना



चित्रकाव प्रीति



8. संगीत शिक्षा

(खाँगा)

9. रानानां धते

(एकांकी -खपाना खात्रेयी- खंतिम भाग)

10. पंजी प्रबंध

पंजी संग्रहकउशी रिद्यानन्द ना"मोहनजी"

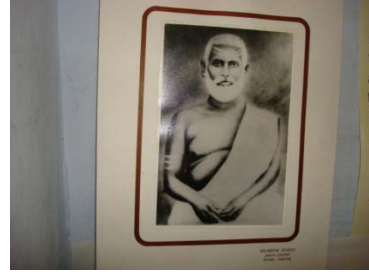
पंजीकार





11. मिथिना खा' संस्कृत(सरतंत्रस्रतंत्र रँचा

नाक डीरनी-दोसब भाग)



12. भाषा खा' श्रीद्यागिकी

13. बचना निखरँसँ पहिने... (खाँगा)

14. प्ररामी मेथिन English मे

थ. VN Jha केब Globalization- Is it a boon or a curse for the Maithils ?

था. VI DEHA, M t h i l a, T i r b h u k t i ,
T i r h u t ... (खाँगा)



रिदेह (दिनांक 01 अप्रैल, 2008)

संपादकीय

वर्ष: 1 मास:

4 अंक:7

मान्यवर,

रिदेहक नर अंक (अंक 7 दिनांक 1 अप्रैल 2008) का परिनिष्ठा
भ' बहन अछि। एहि हेतु नाँग आँन कक
<http://www.videha.co.in> | एहि अंकमे रिकानन्द नामक
अंग्रेजी निबंध साहित्यकेँ समाजसेँ जोड़बोक उद्देश्यसेँ बाखन गेन
अछि। जातिनाचोषवीक करिताक संग पञ्जीकावजीक पञ्जी पब
निबंध देन गेन अछि। प्रसमी मैथिल सुंभमे रिदेहक
अतिहासकेँ अँगा रँट 10न गेन अछि।

बचना निखरसँ पहिने.. सुंभमे मैथिली अकादमी द्वारा निर्धारित
भाषाक अंकन कएन गेन अछि, एहिमे विशेष रूचि कएन गेन



खुष्टि । श्री उदय नावायण सिंह नचिकेता, निदेशक, केन्द्रीय भाषा संस्थान, मैसूर केव मेन प्राप्नु भेन था' ओ' निखनहि जे ओ' एकवा डाँ. श्री री मल्लिकार्जुनकेँ खग्रसावित कए देनहि, जे केन्द्रीय भाषा संस्थान, मैसूरमे भाषा पौद्यागिकी रिभागक अध्याक्ष छथि । श्री मल्लिकार्जुनजीक ङ-मेन सेहो प्राप्नु भेन था' ओ' निखनहि खुष्टि, जे एकवा कमेठीक समक्ष बाखन जायत । री. मल्लिकार्जुन मैथिनी स्थापन मन्वखन रँनएरौक कार्यकेँ थागाँ रँढ । बहन छथि ।

श्रीति द्वावा कना था' चित्रकना सुंभ चित्रित कएन गेन खुष्टि ।

मिथिनाक बनेमे साहित्यकारक खतिविङ्ग खेनकूद था' खग्यान्त रिधामँ संरंधित (संगीत, फिल्म, पत्रकारिता, गतिहास, संस्कृत था' खंग्रेजी, खथशाम्नी, डिप्लामेठ, बजनीतिङ्ग थादि)मिथिनाक रिभूतिक चित्र प्रदर्शित खुष्टि । रेँसागठ खोनना खननुब रिद्यापतिक 'रँढ स्वखसाव पाउन तुर तीरे'क रावाणसीक गंगतठ पब शिहनाग पब भावत बने रिस्मिन्नाह खान द्वावा रँजाउन, था' तरँना पब किसन महाबाज था' रायनिन पब श्रीमति एन. बाजम द्वावा रँजाउन संगीत रँजि उठैत खुष्टि । संपर्क_खोज सुंभ पब मिथिना था' मैथिनीक सागठ सभक संकनन/निक देन गेन खुष्टि । रिदेहक खपन सर्च गँजिनसँ रिदेहक नर-पुवान खंककेँ तानन जा' सकैत खुष्टि । दोसब सर्च गँजिनसँ मैथिनीक रिशेष संदर्भमे संपूर्ण रेँकेँ तानि सकैत छी । पुवान कितारँ सभक डिजिठन गमेजिंग रिदेह कँपैवाक खतझात कबराउन जा' बहन खुष्टि । रेँ



सर्चेरन डिकशिनवी जाहिमे पाठक नर-नर शिद्ध जॉर्डि सकताह केव कार्य सेहो खावंत कएन गेन थछि । मैथिनीमे रौनानांप्रतेक एनीमेशन सेहो शुक कए देन गेन थछि । पृथ्गीक मिथिनाम्भव था' देरनगवीक पत्रक सेहो स्कनिग शुक भ' गेन थछि । ङा सभ शीघ्र थाकगिरक थंतआत देन जायत । रिदेहक प्वान थंक सामान्य था' pdf फॉर्मेटमे थाकगिरक थंतआत बाखन गेन थछि । पाठक पाक्षिक पत्रिकाक pdf संस्करण डाउनलोड सेहो कए सकैत छथि । प्रथम पृष्ठ पव देरनागवी ठांगप कवरॉक हेतु किछ सहयोगी निंक देन गेन थछि । एहि तबहक तेसव निंक पव आँननागन ठांगप क' काँपी क' ङा-मेन किंरा रड दॉक्यूमेंटमे पेस्ट क' सकैत छी ।

अपनेक बचना था' प्रतिफ्रियाक प्रतीक्षामे ।

गजेन्द्र ठावर 01.04.2008

389, पाँकेठ-सी, सेकठव-ए, रँसनुहंज, नर देहनी-110070.

<http://www.videha.co.in>

ggajendra@videha.co.in

ggajendra@yahoo.co.in



(c)2008. সর্বাধিকাৰ লেখকাধীন আ' জতয় লেখকক নাম নহি অঙ্চি ততয় সঁপাদকাধীন ।

বিদেহ (পাক্ষিক) সঁপাদক- গজেন্দ্র ঠাকুৰ । এতয় প্ৰকাশিত বচনা সন্ভক কাঁপীবাগঠ লেখক নোকনিক নগমে বহতলি, মাত্ৰ একব প্ৰথম প্ৰকাশনিক অধিকাৰ এহি গ্ৰ পত্ৰিকাৰ্কে ঙ্কে । বচনাকাৰ অঁপন মৌনিক আ' অঁপ্ৰকাশিত বচনা (জকব মৌনিকতাক সঁপূৰ্ণ উত্তবদায়িত্ব লেখক গঁগক মধ্য ঙ্চি) ggajendra@yahoo.co.in আঁকি ggajendra@videha.co.in কেঁ মেন অঁঠেচমেঠক কপমে .doc, .docx আ' .txt ফাঁমেঠমে পঠা সকেত ঙ্চি । বচনাক সঁগ বচনাকাৰ অঁপন সঁক্ষিপ্ত পবিচয় আ' অঁপন স্কেন কএন গেন ফোঠে পঠেতাহ, সে আঁশা কৰেত ঙ্চি । বচনাক অঁতমে ঠাগপ বহয়, জে গ্ৰ বচনা মৌনিক অঁচি, আ' পহিন প্ৰকাশনিক হেত্ত বিদেহ (পাক্ষিক) গ্ৰ পত্ৰিকাৰ্কে দেন জা বহন অঁচি । মেন প্ৰাপ্ত হোয়ৰাঁক বাদ যথাসঁভৰ শীঘ্ৰ (সাত দিনক ভীতব) একব প্ৰকাশনিক অঁকক সূচনা দেন জায়ত । এহি গ্ৰ পত্ৰিকাৰ্কে শ্ৰীমতি নক্ষ্মী ঠাকুৰ দ্বাৰা মাসক 1 আ' 15 তিথিৰ্কে গ্ৰ প্ৰকাশিত কএন জাগত অঁচি ।

1. শৌধ লেখ:

মাযানন্দ মিশ্ৰিক গতিহাস রৌধ (আঁগা)

প্ৰথম শৈন পুত্ৰী চ/ মন্ত্ৰপুত্ৰ/ পুরোহিত/ আ' স্ত্ৰী-ধন কেব সঁদৰ্ভমে

শ্ৰী মাযানন্দ মিশ্ৰিক জন্ম সহবসা জিনাক বঁলৈনিয়া গায়মে 17 অগস্ত 1934 গ্ৰ.কেঁ ভেনলি । মৈথিলীমে এম.এ. কএনাক বাদ কিঙ দিন গ্ৰ আঁকাশিৰানী পঠনাক চৌপান সঁ সঁৰক্ষ বহনাহ । তকবা বাদ সহবসা কাঁনেজমে মৈথিলীক ব্যাখ্যাতা আ' বিভাগাধ্যক্ষ বহনাহ । পহিনে মাযানন্দ জী কৰিতা নিখনলি,পঙাতি জা কয় হিনক প্ৰতিভা আঁলোচনামেক নিৰঁধ, উপন্যাস আ' কথামে সেহো প্ৰকঠ ভেনলি । ভাৰ্ফ নোঠা, আঁগি মোম আ' পাখব আওব চন্দ্র-বিন্দু- হিনকব কথা সঁগ্ৰহ সন্ভ ঙ্চি । বঁহাৰ্গি পাত পাখব , মন্ত্ৰ-পুত্ৰ ,খোতা আ' চিড়ে আ' সূৰ্যাস্ত হিনকব উপন্যাস সন্ভ অঁচি ॥ দিশাঁতব হিনকব কৰিতা সঁগ্ৰহ অঁচি । একব অঁতিবিজ সোলে কী লৈয়া মাঠী কে লোগ, প্ৰথম শৈন পুত্ৰী চ,মন্ত্ৰপুত্ৰ, পুরোহিত আ' স্ত্ৰী-ধন হিনকব হিন্দীক প্ৰতি অঁচি । মন্ত্ৰপুত্ৰ হিন্দী আ' মৈথিলী দ্ৰু ভাষামে প্ৰকাশিত ভেন আ' একব মৈথিলী সঁস্কৰা'ক হেত্ত হিনকা সাহিব অঁকাদমী পুবস্কাবসঁ সন্মানিত কএন গেনলি । শ্ৰী মাযানন্দ মিশ্ৰি প্ৰৰৌধ সন্মানসঁ সেহো পুবস্কৃত ঙ্চি । পহিনে মাযানন্দ জী কোমন পদাৰনিক বচনা কৰেত ঙ্চনাহ , পাঙা জা কয় প্ৰযোগবাদী কৰিতা সন্ভ সেহো বচনলি ।



प्रथमं शैल प्रती च/ मंत्रप्रवा/ प्रबोहित/ था' स्त्री-धन केव संदर्भमे

प्रवातातिरुक् ,भाषावैग्यानिक था' साहित्यिक साम्प्र्य एहि पम्फमे
थछि,जे थार्य भावतक मून निरामी छुनाह । थार्य भाषा परिवारक
नामकवण मैक्लमूनव द्वावा कएन गेन छुन । द्रविड परिवारक
नामकवण पादवी बॉर्रैट कान्डरेन द्वावा कएन गेन छुन । थार्यक
थाक्रमणक सिद्धांत थायन ग्रिफिथक ऋष्यदक थनुरादमे देन गेन
हूँठनोठसँ । पहिने तँ ङा रौत जे ङा नामकवण रिदेशी रिद्वान
द्वावा देन गेन छुन, ताहि द्वावे ओकव थपन उँद्धथ होयतेक ।

सवस्रती नदी,जन-प्रनय, मन्, था' महामत्स्यक कथा, गिन्नमेशे कथा
कार, प्राणरंतक देशे गिन्नमेशेक थोज, सृष्टिकथा था' देरतंत्रक
रिकाम एहि सभ्ठाक समाजशास्त्रीय रिकामक रिन्नेषन थार्य नोकनिक
भावतक मून निरामी होयराक साम्प्र्य प्रसुत करैत थछि ।

ऋष्यदमे मात्रसत्रामेक र्यरस्यक स्यूतिक कपमे रँह्रचन स्त्रीनिंगक
प्रयोगक रँहनता थछि ।

सघोष था' महाप्राण ऋष्यदिक था' भावतीय भाषाक ध्वनिक प्रतिकप
नहि तँ ङवानी था' नहिये यूरोपीय भाषा सभमे भेठैत थछि ।

सवस्रती था सिन्धु धावक रौचक सञ्चता छुन थार्यक सञ्चता ।

सवस्रती धावक तँठरती भवत, प्रक था' थन्य गण सभ मिनि कए



ऋग्वेदक बचना कएनन्हि । सबस्रतीमे जन-प्रनयक रौद ङा सञ्चता सावस्रत प्रदेशे सँ हष्टि कए ऋक-पाँचान था' ब्रह्मर्षि प्रदेशे- मध्यदेशे- पहुँचि गेन । अतिहाममे भवत नोकनिक महत्त्व समाप्तु भ' गेन ।

एहि जन प्रनयक रौद आर्यजन नोकनिक रंशज नोकनि मोहनजोदड़ । था' हड़प्पा नगबक निर्मणि कएनन्हि ।

हड़प्पा सञ्चताक 800 मे सँ 530 सँ ङुपव स्थान, एहि ब्रुप्तु सबस्रती धाबक तष्ट पव अरस्थित छन ।

सिन्धुक धाव पव एहि स्थन सभक रँडु कम निर्भवता छन, था' जखन सबस्रतीमे पानिक प्रराह घष्टन तँ एहि सभ केन्द्रक द्रास प्राबन्तु भ' गेन ।

पहिने सबस्रतीमे जन-प्रनयसँ आर्यक पनयन भेन(ऋग्वेद था' यजुर्वेदक बचनक रौद) था' हेब सबस्रतीमे पानि कमी भेनासँ दोसब रँव आर्यक पैघ पनायन भेन(अथर्ववेदक बचनक पहिने) । अवा-ह्यज बथक रर्णन वेदमे भेष्टैत अछि । नहि तँ ङा पश्चिम एशियामे छन था' नहिसे यूरोपमे ।

हेब ङा बह, भावतीय देरनाम,शिप्प,कथा, अश्विरीद्या,संगीत, भाषिक तत्त्व था' चिंतनक संग उद्धाष्टित होमय नागन पश्चिम एशिया, मिश्री, था' यूनानमे ।



(खनरतते)

2. उपन्यास

महशरौहनि (खाँगा)



खा' नियत तिथिकेँ शुक भेन दानरीब दधीची नाठक । स्कून खूजरासँ किछु कान पहिनहि हम मभ पहुँचि गेनहुँ स्कून । रँबन्डाक एक कौनमे गाम पवसँ खानन चद्दबिक पदाँ रँनन । बस्सी ठीकसँ नहि नागि सकन से ङाएह निर्णय भेन चद्दबिकेँ डुपव उँठा-खसा कए



काज निकानन जाएत । तकवा रौद कनाकाब सभ थपन थप ड्रेस पहिबए नगनाह । ड्रेस की छन मात्र पाँडव नगा' कय था' गमछा, धोती पहिबि कय सभ सभ तबहक ड्रेस पहिबि नेनक । जाहि मासुबसाहेरक डूठी नागन छन नाँकक संचाननक हेतु, हुनका कोनो थारथक कार्य मोन पड़ि गेनन्हि, से ओ' ओहि दिन छुष्टी याबि देनन्हि । गामक पैघ त्रुबियाकेँ तारत रूमरामे थारि गेनेक,जे प्रागमबी स्कूनक छौड़ । सभ नाँक क' बहन थछि । से त्रुबनुमे दस ठाँ पैघ रँचा सभ जूँठि गेन था' पिहकाबी देनाग शुक क' देनन्हि । हम सभ कनाकाबकेँ कहनियन्हि, जे ए सभ उँतुजित क' कय हमब सभक नाँककेँ दूबि कबत । झुदा छौँटे भाग बीड़ि गेनाह । कहय नगनाह जे हे रौँथा सभ, हम नाँकक ड्रेसमे छी, तेँ ए नहि रूमू जे याबि नहि कबरँ । एखने ड्रेस हेलि-हागक क' हम सभ कर्म क' दग जायरँ थहाँ सभकेँ । झुदा पिहकी पावनहाबक संख्यामे घँठी नहि भेन । था' छौँटे भाग रँजि उँठनाह जे छौड़ू थाग एहि नाँककेँ । हिनका सभक रँदमसुती हम एखने ठीक करैत छी । था' थुँछा उँथाड़ि कय दौड़नाह । तारत थाम्ह-थोम्ह कबय रँनाक जूमन भ' गेनेक था' तकवा संगहि नाँक दानरीब दधीची जे हमब निखन छन था' जकब मँचनक निर्देशन हम कबए रँना छनहुँ,



रौचहिमे खतम भ' गेन । किछु दिन धरि छोटे भागसँ मूहा-
हूनी बहन । ओ' खरिथि खा' कहथि जे की कक, तामस उठि
गेन छन । ओहो सभ खततह क' देने छन । फेब किछु
दिनका रौद सभठा सामान्य भ' गेन । बामनीनाक खा' नाठकक
भूत सेहो एहि घटनाक रौद हमबा पवसँ उतवि गेन ।

(खन्नरतते)

3. महाकार्य महाभावत (खाँगा)

फाधित हृदय ञास्यकि रशमे छन दूर्योधनक,
शिकनि संग मंत्रणा कए क' एकठा रिचावन,
सोने ह्यहमे पाँडरकेँ हरेनाग खड्गि झुशिकन,
सोचि ञा दोसब रूह बचनहि दूधु शिकनि ।
भर्य सभा भरन एकठा हम सभ रौनायर,
पाल्दर-जनकेँ देखरौ नैन सेहो रौजायर,
द्यूत खेनक छी महावथी हम गांधावरासी,



धृतवाष्ट्रकेँ कहि खामंत्रित कवाडुँ रँजाडुँ ।
भरन रँनि कय तैयाव भेन एके निसासी ।
द्यूत खेनक खामंत्रणक हेतु धृतवाष्ट्र रिचावन ।
रिद्व कहन बाजन् खेन कवत रिनाशि सभकेँ,
दुर्योधनक अंधप्रेममे धृतवाष्ट्र झुदा नहि मानन ।
स्रयं रिद्व गेनाह देरैय निमंत्रण गंद्रप्रसू,
पाल्दर जनकेँ अथना पव भेन प्रेम-मिनन ।
झुदा हृदयक रिष रँहवागत जन्दी कोना कए,
दुर्योधन नय गेनाह हथिष्ठिवकेँ सभा भरनमे ।
द्यूतक चर्च सगवय होमय नगन छन ओतय,
शुकिनि माष्टि हेँकि कहन हथिष्ठिव भ' जाय,
सहृचागत छी म्फ्रिय भ' कवय छी खन्नचित ।
हथिष्ठिव तैयाव जखने भेनाह,दुः शोसन कहन,
अ खेन होयत हथिष्ठिव खा' दुर्योधनक रिच,
मामा शिहनि पास हेँकताह दुर्योधनक दिशिँ,
हूनक हावि जीत मानन जायत दुर्योधनक से,
दोसब दिन खेन भेन सभा भरनमे भावतक हे ।
सभा भरन दर्शकिसँ छन भवन,छन ओतय,



बीश्व, द्राण, प्रपाचार्य, रिद्व, धृतवाष्ट्र उंपस्थित ।
पहिने बनेक रौज्जी, हेब चानी-सोनक नागन,
हेब छन सभक खन्नि-बथ नागन जुखा पब ।
झदा जकन तीनु ठा रौज्जी हथिप्रिब हाबन,
सौंसै सेना नागाउन दार पब ओ'खलागन ।
हेब रैब खायन बाज्यक हेब चाक भाँय केब,
हथिप्रिब रौजन नहि रँचन नग हमबा नेन ।
शिकनि कहन छथि द्रौपदी खहाँक रिचमे ।
एहि रैब जौँ जीतरँ खहाँ, दए देरँ हम सभ,
भाग, बाज्यसेना, खन्नि-बथ, बने चानी सोन सभ ।
हथिप्रिब सुनि ग्रा भ' गेन छन तैयाव जखने,
हा । धिक् । पापकर्म की भय बहन खच्छि ग्रा ।
सभा रिच उँठि पड़न सभक नाद ग्रा सभ ।
हथिप्रिब सेहो कहन हम की ग्रा कएनहँ ।
खानन्द मग्न कौबर छन, झदा संतपु अकेठा,
दुयोधिन-भ्राता हथिसे छन शौकाहन सएहठा,
शिकनि खारँ एहि सभक रीच, हेकनक पास,
ग्रा रौज्जी हमब, हुँकाबनक शिकनि हाबन हथिप्रिब,
द्रौपदीकेँ हावि ठकायन ठाँद छन सभा रिच ।



(खन्नरतते)

4. कथा

हम नहि जायरि रिदेशे

“यौ भैया । कनेक काकामँ भैँठ नहि कवा देर” ।

“काका छथि खहाँक । खा’ भैँठ कवा दिख हम” ।

“यौ । ओ’ तँ हमवा सभकेँ चिन्हितो नहि छथि । रँचमे गामसँ निकनि गेनथि , से घुबि कए कहाँ खएनाह” ।

“रैँशे । तखन चनू भैँठ कवरा’ दैत छी । झूदा कोनो पैंबरी खाकि काज होय तँ पहिने कहि दैत छी, से ओ’ नहि कवताह” ।



“नहि । कोनो काज नहि खछि । मात्र भेँष्ट कबरौक गछा
खछि । भावत रर्यमे एतेक नाम छन्हि, सभ चिन्हत छन्हि, झुदा
नहिये हमबा सभ चिन्हत छियन्हि , खाइ नहि रैह चिन्हत छथि” ।

नान गेन छनाह दस दिन पहिने, द्विजेन्द्र जीक घब पब ।
जागते देवी नानक कष्टाङ्क शुक भ’ जागत छन्हि । गामकेँ
रिसवि गेनियेक । घुबि क’ देखरौ नहि कएनहूँ । खोपड़ िकेँ
घब त’ रँना नैतहूँ । खा’ जरारौ भेँष्टन्हि, ओहिना रँनन
रँनाउन । जे जा’ कय की कबरौ । एक कष्टाङ्क घबावी खा’ ताहि
पब कतेक रौरूक कतेक भाँय । खा’ खेब रामपंथी रिचावधाबाक
चिन्तन शुक भ’ जागत छनन्हि । गाम खछि धनीकक नेन ।
यारत गामक जनसंख्या कम नहि होयत तारत धरि तँ खरथ ।
गवीरौमे नोककेँ नोक नहि रूँमेत खछि का । झुदा नगब मात्र
दिल्ली, कनकता नहि खछि । यारत मधेपब, मधेपबा, रँनेनी खा’
मंभावपबक रिकाम नहि होयत, शोषित रञ्ज बहरौ कबत ।
तारत द्विजेन्द्र जीक कनियाँ चाह बाथि गेनथि ।

द्विजेन्द्रजी गामेमे प्राथमिक शिक्षा प्राप्त कएनन्हि । मंभावपबमे
मिडन स्कूल खा’ हाग स्कूल पेरै जाथि । पितार्जी बाँचीमे



ठिकेदावी करैत छनखिन्ह । माय पढन-निखन छनीह । नोक कहत छन जे उपनाम सेहो पढत छनीह ।

दबलंगामँ सोने प्रयाग पहुँचि गेनाह द्विजेन्द्र । पिता छनाह नरका रसातक नोक । खूर कमाथि खा' खूर खर्च कबथि । गामसँ कोनो मरकाब नहि । कनियाँक खोजो-खरबि नहि नैत छनाह । नोक कहत छन जे दोसब रिखाह क' नेने छनाह बाँचीमे । नोक ग्रहो कहत छि, जे यारत गाममे छनाह ओ' तारतो रैह हान छनहि । रैक पहव तीन रजेसँ कनियाँ हुनका नेन भाँउ पीसरी प्राबन्ध क' दैत छनीह । झुदा रङ्का रैठाकेँ खूर मानैत छनाह । छोटका रैठा हुनके पब गेन छनहि । नाम छन हरेन्द्र खा' नोक कहत छि, जे पठनाक कोनो गेवाजमे काज करैत बहथि । द्विजेन्द्र गुरु-गम्भीर, पढरामे तेज, सब रिषयमे पितामँ रिपवीत । खा' ताहि द्वारे पिता हुनकब खर्च पठेरामे कोनो रिनम्र नहि करैत छनाह । एहि पठाउन पागसँ द्विजेन्द्र छोट भागकेँ सेहो नुकाकेँ पाग पठा दैत छनाह । मायक सुधि झुदा हुनको नहि बहैत छनहि, खाकि भ' सकैत छि जे ओतेक पाग खा' समय नहि बहैत होयतहि ।



মাঘ রৌচাবীকেঁ কা কহি দএন্থি, জে রৌঠাকেঁ ফেব ফস্ট ডিৰীজন ভেন ছন্থি, খাকি পতিকেঁ হাগরে কেব ঠেকা ভেটি গেন ছন্থি, তঁ ও' তিবপিত ভ' জাগত ছনীহ। গামমে রৌঠাগদাব সভ জে কিছ দ' দএন্থি তাহিসঁ কোনো তবহেঁ গ্ৰজব চনি জাগত ছন্থি। নীন বংগক নুখা, বরিয়া রাগন কহিত ছন কোঠাক দোকান রনা সভ ওহি নুখাকেঁ, সেহো সস্তমে ভেটি জাগত ছন্থি, ওহি কোঠা রনা দোকানসঁ। বনে-রনে গাছীমে ঘুময পড়িত ছন্থি জাবনিক হেত্ত। গামমে সভক গ্ৰজব কোহ্নাকেঁ ভ' জাগত ছেক।

খাঃ এম্হব ঠেকেদাব সাহেরঁ পেঘ রৌঠাকেঁ সময় পব পাগ পঠেরাক খতিবিকত্ত খপন সভ কর্তরা রিসবি গেন ছনাহ। কমাউ খাঃ খাউ ছন মাত্র হুনকব মত্র। গাম-ঘবসঁ কোনো মতনরেঁ নহি।

দ্বিজেন্দ্র গনাহারাদ রিশ্বরিদ্যানযমে সভক খাদর্শ রনি গেন ছনাহ। গতিহাস রিষক তিখি সভ হুনকব সংগী রনি গেন ছন। রিশ্বরিদ্যানযমে সর্প্রথম তঁ খরিতে বহখি, সংগি হুনকব চানি-চনন, গ্বক-গম্ভীব স্নভার, পবিপক্ক মানসিকতা এহি সভসঁ সভ কা প্রভারিত বহিত ছন। সংগী-সাখী সেহো কস্ম ছন্থি। একটা সংগী ছন্থি উপেন্দ্র খাঃ একটা খানোক। মহিনা সংগী কোনোটা নহি। ও' সভ কহিতো ছনীহ জে দ্বিজেন্দ্র তঁ ঘুবি কয



तकितो नहि छथि । ओहिमे एकठा छनीह खकहती । पढरौमे तेज, बाजनीति रिज्ञानक रिद्यार्थी । प्रतियोगी सुभारक छनीह । रौपक दुनाक, खाः पितारकेँ हुनका पब सेहो खसीम रिश्वास छनहि । एडराग्न कहि सकैत छी । द्विजेन्द्रसँ रहुत रिन्दू पब सुनारक खाकांझी छनीह । झुदा द्विजेन्द्र रौरू तँ दोसरे नोक छनाह । घबक कोनो गप तँ ककरो रूमन नहि बहक । झुदा से कावण छन जे द्विजेन्द्र सभक प्रति निबपेक्ष बहत छनाह ।

“यौ उपेन्द्र । बाजनीति रिज्ञानमे तँ हमबा कोनो दिक्कत नहि खछि, झुदा गतिहासमे तिथि खाः दृष्टिकोणसँ रहुत दिक्कतिमे पड़ि गेन छी” । खकहती उपेन्द्रसँ प्छनहि ।

खाः दू गोठे गतिहास पब खपन- खपन दृष्टिकोण एक दोसबकेँ देरैय नगनथि । बासरिहावी रौस खाजाद हिन्द ह्णुजक सुापना कएनहि सुभाष चन्द्र रौस नहि खाः नीनक खेतीक हेतु सबखेज जे ग्जवातमे छन रहुत प्रसिद्ध छन, धोनारीब सभसँ पैघ सिन्धु घाटी खाकि सबसुती नदी सञ्चताक सुन छन खाः दावा शिकोहकेँ सभसँ पैघ मनसरँ देन गेन छन, उपेन्द्र ङा सभ गप द्विजेन्द्रसँ पृछि कए खारथि खाः खेब खकहतीसँ रातुनाप कबथि । एहिमे समयक हानि होगत छन । से उपेन्द्र कहनहि,



জে কিএক নহি দ্বিজেন্দ্রকেঁ সেহো খপন সমূহমে শামিন কএ নেন জায় ।

” মাত্র দ্বিজেন্দ্রকেঁ শামিন কক । রেশী গোঠেঁকেঁ খানরঁ তঁ পঢ় াগ কম খা গপ সবক্লা রেশী হোযত” ।

উপেন্দ্রক কহনাসঁ দ্বিজেন্দ্র খারঁয নগনাহ, সামূহিক খধ্যনমে ।

তারত এক দিন সমাচাব খাযন জে পিতাক মোন রঁডু খবারঁ ছনহি । পহঁচনাহ তঁ নীরব খবারঁ হোযরঁক সমাচাব ভেঠনহি । সতমাযসঁ সেহো ভেঁঠ ভেনহি । গাম-ঘব পব কোনো খরঁবি নহি । ফেব 15 দিনমে মূহ্ ভ' গেনহি পিতাক । গাম পব তখন জা' কয খরঁবি ভেন । নহি তঁ কোনো পতা,নঞ তঁ কোনো ফোন । মায রৈচাবী কনেত বহি গেনীহ । রৈঠা দাহ-সংস্কাবক রাঁদ সোমে শ্রযাগ চনি গেনাহ । গাম ঘূবিযো ক' নহি গেনাহ ।

মাযক খিআ য়েহ খছি, জে ফেব ও' গুম-শুম বহয নগনীহ । কোনো চীজক ঠেকান নহি বহনহি । এক রৈব তঁ ডিরঁযা সঁ চাবক ঘবমে তেহন খাগি নাগি গেন জে সোঁসে ঠেন জবি গেন । ওহি সময়মে সন্তকেঁ চাবক ঘব বহক । সন্ত ঘব এক দোসবসঁ সঠন ।



পূবা ঠেন জবি গেন। সন্ত কহয় জে দ্বিজেন্দ্রক মায ঊপন্যাস পঢ়ত-পঢ়ত স্মৃতি গেনীহ খা ডিরিয়ামে হাথ নাগি গেনহি। সৌমে ঠেন জরিত বহয়, খা ও ভেব ভেন সূতন ছনীহ। ককরো ফুরেনগ তঁ হুনকা উঠা-পুঠা ক রাঁহব কএনক। রাঁদমে হুনকব খারো খরহেননা হোময নাগন। নোক গাবি সেহো পঢ়ি দেনে ছনহি কতাক র়েব। ওহিনামে এক র়েব জাবক ন্যপসীমে গ্বজবি গেনীহ। দ্বিজেন্দ্রক পতা সেহো নহি ছনহি ককরো নগ। ঘবাবীক নোভমে এক গোট সমাঙ খাগি দেনকহি।

দ্বিজেন্দ্রক নিকঠতা খবহুতীসঁ র়্হয় নগনহি। ঊপেন্দ্রকেঁ খবহুতী এক র়েব কহিয়ো দেনখিন্হ জে খহাঁ সীঢ়ী ছনহঁ হমব খা দ্বিজেন্দ্রক রাঁচমে। খবহুতীক মায সেহো রাঁচমে গ্বজবি গেন ছনীহ। পিতাক দুনবী ছনীহে ও। খবহুতীক কহনা পব দ্বিজেন্দ্র খারি গেনাহ হুনকা ঘব পব বহরাক নেন। সংগে পঢ়নহি, খা ফেব দুনু গোট্টে প্রযাগ রিশ্বিরিঘ্যানযমে প্রাফেসব র়নি গেনাহ। রিরাহ সেহো ভ গেনহি। মাত্র মধুরনীক এক গোট্ট পীসাকেঁ বুঁমন ছনহি হিনকব রিরাহক রাঁত। পীসা ছনাহ পত্রকাব খা মধুরনীক কোনো হাঁস্পীঠনমে কাজ কেনহাবি কেবনক নর্ম সঁ তাহি জমানামে রিরাহ কএনে ছনাহ। ঘব পবিরাব হুনকা রাঁবি জেকাঁ দেনে ছনহি। স্হদা ছনাহ র়্হু নীক নোক। দ্বিজেন্দ্রকেঁ



रैह रैब-रँखत पब कहियो कान मदति करैत छनाह । झुदा
रिराहमे ओहो नहि खयनाह । खपन सनाहो देने छनाह एहि
रिराहक रिकरु । खपन उदाहरण देनहि, जे कतेक दिक्कत
भेनहि । झुदा संगमे ओहो कहनहि, जे खहाँकेँ तँ राहब बहराक
खुष्टि । हम तँ मधुरनीमे बहैत छनहुँ, कहियो कनियारुँ गामो
नहि नः जाः सकनहुँ ।

द्विजेन्द्रकबिसर्च पब बिसर्च प्रकाशित होगत गेनहि । देशी-
रिदेशीमे सेमीनार पब जाथि । खरुजती जेना रैब पब मदति
कएने छनीह, तकवा रौद द्विजेन्द्र खपना पब भरोस कएनाग
छोड़ि देने छनाह । रामपंथी गतिहासकारक रुपमे छरि रँनाः
कय मात्र गतिहास खाः पुरातत्त्व सँ सम्पर्क रँनओने छनाह ।
सानक-सान रिँतेत गेन । गामक लोकमे मात्र नान छनाह जे
ओहि नगबमे बहैत छनाह खाः ताहि द्वारे कहियो कान भँँँ कः
खरैत छनखिन्ह । नानक गप पब खनुतुवित भः जागत छनाह
द्विजेन्द्र । मायक कोनो चर्चा पब नोब पीरि जागत छनाह ।
सोचने बहथि जे किछु रँनि जयताहँँँ मायकेँ संग खानि बथितथि
खाः सभ पापक पश्चाताप कः नितथि । झुदा यारत खपन खर्चा
नहि जुमहि तरतँँँ ओः जीरित बहनीह खाः जखन किछु रँननाह
तँँँ तकब पहिनहि छोड़ि गेनीह । कोन झूँह ककवा देखेतथि ।



था जखन नान पहुँचनाह हुनका नगमे ङा रँजेत जे नियह,
भातिज थायन छथि भँैठ कबरँाक हेतु, खहाँ तँ कोनो सराकाब
ककरोसँ बखरँे नहि कएनहुँ, तँ पहिन रँेब रँजनाह द्विजेन्द्र-

“कोन सराकाब मायसँ पैघ छन यो नान, जे खहाँ कहत छी जे
हम ककरोसँ सराकाब नहि बखने छी” ।

5. पद्य



ज्याति ना चौधबीक पद्य



रिशोन सद्द

सद्दक नहबिक तबंग

खनगिनत रैब दोहवा बहन खड्डि ।

उद्धशुहीन खपने द्ददा ओकब गान

कहिया कत' सँ चनि बहन खड्डि ।

रैब रैब रेत पब रैनन पदचिहन

मेठा क' तठसं घुबि जागत खड्डि ।

जनक मभसं शिञ्जिशीनी संगठन

सागबक कपमे उपस्थित खड्डि ।

बातिक खन्हारोमे ओकब गर्जन

ओकब रिशोनताक खाभास कवारैत खड्डि ।





था' खान करिक ख्याय करिता

के छथि

के छथि जिनकब हस्त-रेखमे,
थछि पविश्रमसँ रँढरँ निखन ।
के छथि जिनका ननाठ मध्य,
पविश्रमक गाथा बहछ सकन ।
जे छथि स्वस्तु तकरे चमकैत,
थछि हाथक रेखा रूँनुँ सखा,
जिनका घाम नहि थसन्हि,
छन्हि ननाठ चमकैत,नहि रँजाय । ।



6. संस्कृत शिक्षा

(थाँगा)

सुभाषितम्

खल्लदानं पवं दानं रिद्यादनमतः पवम् ।

खल्लन ऋषिका त्रुप्तिः यरज्जीरं च रिद्यया ॥

दानम् कवणेतु । खल्लदानं यदि ऋर्मः महादानम् गति रदत्तु ।

यदि खल्लदानं ऋर्मः, यदा र्बुत्तुम्का भरति तारत् पर्यत्तुम्

तिष्ठति । यदि रिद्यादानम् ऋर्मः यारत् जीरन् तिष्ठति ।

कथा

एकः ग्रामः अस्ति । ग्रामे एकः धनिकः अस्ति । सः महान्

धनिकः । तस्य सुन्दरं भवनम् अस्ति । पत्नी अस्ति, पुत्राः

सन्ति । गृहे सेरकाः सन्ति । धूमिः भूमिः अस्ति । सर्रम् अपि

अस्ति । तस्य कापि न्यूनता नास्ति । अतः सः सर्रदा

उपरिषेति । तथा सः धनिकः तिष्ठति । पवत्तु आश्चर्यम् नामा

तस्य समीपे सर्रम् अपि अस्ति । किन्तु सः धनिकः निद्राम् न



श्राप्राति । बात्री निद्रामेर कर्तुम् सः न शक्नोति । एकदा सः
स्वगृहे उपरिष्ठुरान् आसीत् । चिन्तनं कर्तुम् आसीत् । तस्मिन्पि
दिने तस्य निद्रा न आगता । किमर्थं मम् एतं भवति । गतिं तस्य
मनसि महती चिन्ता उपेक्षः । तस्मिन्नैव समये दूतः सः एकम्
गीतं श्रुणोति । मधुं गीतम् आसीत् । कः एतं गायति । गतिः
सः न जानाति । तथापि पश्चामि गतिं चिन्तयित्वा सः गीतस्य
ध्वनिम् श्रुत्वा खण्ड-खण्डे गच्छति । तस्य गृहेतः समीपे एतं एकं
कृष्णं पश्यति सः । तस्मिन् कृष्णे कश्चन् निर्धनः आसीत् । सः
तत्र शयनं प्रतरान् आसीत् । शयनं प्रत्या, भित्तिम् आनृत्य शयनं
प्रत्या उच्चैः गायन् आसीत् । संतोषेन सः गायति । तस्य हृदये
संतोषः दृश्यते । तद्दृष्ट्वा धनिकस्य आश्चर्यं भवति । अतः सः
प्रश्नं पृच्छति । भो भो मित्रा । भवान् एतारता आनन्देन गायन्
अस्ति । भवतः आनन्दस्य किम् कारणम् गतिं पृच्छति । तदा सः
निर्धनम् उक्तुं रदति । महाशयः, मम् समीपे धनं किमपि नास्ति ।
सन्तम् । तत् अहं जानामि । किन्तु अहं रूढिः पश्चामि । प्रकृतिं
पश्चामि । गदानीं प्रकृतिः कथं शोभते । रसन्तुकानः अस्ति ।
सर्वं पुष्पाणि रिकसन्ति । भ्रमराः संचारं कर्तन्ति । रसन्तुकानस्य
सौन्दर्यं सर्वत्र दृश्यते । एतद् अस्ति अहं तद् पश्चामि । भवान्
रसन्तुतः किम् करोति । मम् समीपे तत् नास्ति, एतत्
नास्ति, अत्र नास्ति । तद्वै चिन्तनं करोति । यद्यपि भवतः
समीपे रूढिः रूढिः अस्ति, तथापि भवान् यत् नास्ति तस्य विषये



चिन्तनं करोति । अतः दुःखम् अन्वभरति । अहं यत् अस्ति तस्य
रिष्य चिन्तनं करोमि, अतः अहं स्वर्थां अन्वभरामि । एतद्वैर बहस्यम्
गति निर्धनः रदति । तस्य रचनं श्रुत्वा धनिकस्य ज्ञानोदयः
भरति । सलमेर खन्न । रयं सरदापि अस्ति । तस्य रिषये
चिन्तनं हर्मः चेत् । संतोषम् अन्वभरामः । यत् नास्ति तस्य
रिषयेर चिन्तनं हर्मः चेत् रयम् अपि दुःखम् अन्वभरामः ।

कथायाः अर्थः ज्ञातः ।

गीतम्

रषकाने आकाशे,
चष्टका रिचवति आगच्छति ।
शीतल समीव, चपना,
मेघ गर्जति तीव्रा,
जन-रिन्दु निपतति,
रिद्धुत नमति ।

सन्ताषणम्



खद्य शिनिरामवः । श्वः बरिरामवः / भान्वरामवः ।
खद्य कः रामवः । शिनिरावः कदा । पवश्वः सोमरामवः ।
बरिरामवः कदा । सोमरामवः कदा । खद्य शिनिरामवः ।
छः श्वरामवः ।

पवछः श्वरामवः ।
श्वरामवः कदा ।
प्रपवश्वः मंगनरामवः ।
प्रपवछः रूधरामवः ।

रयं प्रतः काने मिनमः ।
किम् रदामः । स्वप्रभातम् ।
बात्री रदामः । श्वभ वात्रिः ।
खद्य समये । नमोनमः / नमस्कावः / नमस्तु ।

यदा दूवराणीं खगच्छति । हविओम् । गति रदामि-हनो स्थाने ।
पुनः रदन्तु ।
एवं प्रन्ना रदन्तु ।

म्फम्यातोम् ।
खाम् । र्नेकठवमणन्ः ।



ऋशीन् । अस्तु । सायंकाने आगच्छामि । पंचरादने आगच्छामि ।

अस्तु धन्यरादः । पशुत्तु । दंतकूर्चः अस्ति ।

दल्लः अस्ति ।

अहं दल्लं स्वीकरोमि ।

अहं शिकतुरर्तिकां स्वीकरोमि ।

अहम् अह्नी स्वीकरोमि ।

अहं नेथनी स्वीकरोमि ।

अहं दूवराणी स्वीकरोमि ।

अहं कवरम्ब्रं स्वीकरोमि ।

अहं प्सुक्तं स्वीकरोमि ।

अदानीम् अहं प्सुक्तं/नेथनी/अह्नी/दल्लं/दंतकूर्चं स्थापयामि ।

प्सुक्तं/दल्लं ददामि ।

दूवराणी/शिकतुरर्तिकां/ दंतकूर्चं/नेथनी/ न ददामि ।

अहम् अह्नी न ददामि ।

अहं प्सुक्तं/चमषं न ददामि ।

भरती किम्

ददाति ।

अहं दंतकूर्चं ददामि ।

भरती किम् ददाति ।



अहं प्रसुकं ददामि ।

भरलाः नाम् किम् ।

अहं र्नेदरती पृष्ठामि ।

भरतः नाम् किम् ।

अहं शशीनेन्द्रम् पृष्ठामि ।

वमानन्दः - वमानन्दम्

रिक्तकोषम्/रिद्यानयम्/मंदिबम्/प्रसुकम्/मानरिकाम्/शशीनाम्/कूपीम्/
घटीम्/अङ्गीम् ।

अहं भगरतगीतां पठामि ।

अहं वामायणं/कारणं/महाभावतं/सुन्दरकालं/सुभाषितं पठामि ।

अहं रिद्यानयं गच्छामि ।

भरतः ह्र-ह्र गच्छन्ति ।

अहं अङ्ग/तिरुपति नगवं गच्छामि ।

अहम् अवणं गच्छामि ।

माधरः ग्रामं/मथुर्वां/राष्टिकां/प्रवीं/दिनी गच्छति ।

अदानी भरतः राकां रदन्तु ।

कः -कः ह्र गच्छतेति ।

परित्रा चनचित्रमन्दिवं/अन्द्रनोकं गच्छति ।



रानकः खापणं गछुति ।

गणेशः रिदेशं/नगवं/रनं/राठिकां/नदी गछुति ।

(खनुरतते)

7. मिथिना कना- चित्रकना



चित्रकाव प्रीति

चित्रकाव- प्रीति, गाम-जगेनी(जिना पूर्णिया),रिहाव, भावत) ।

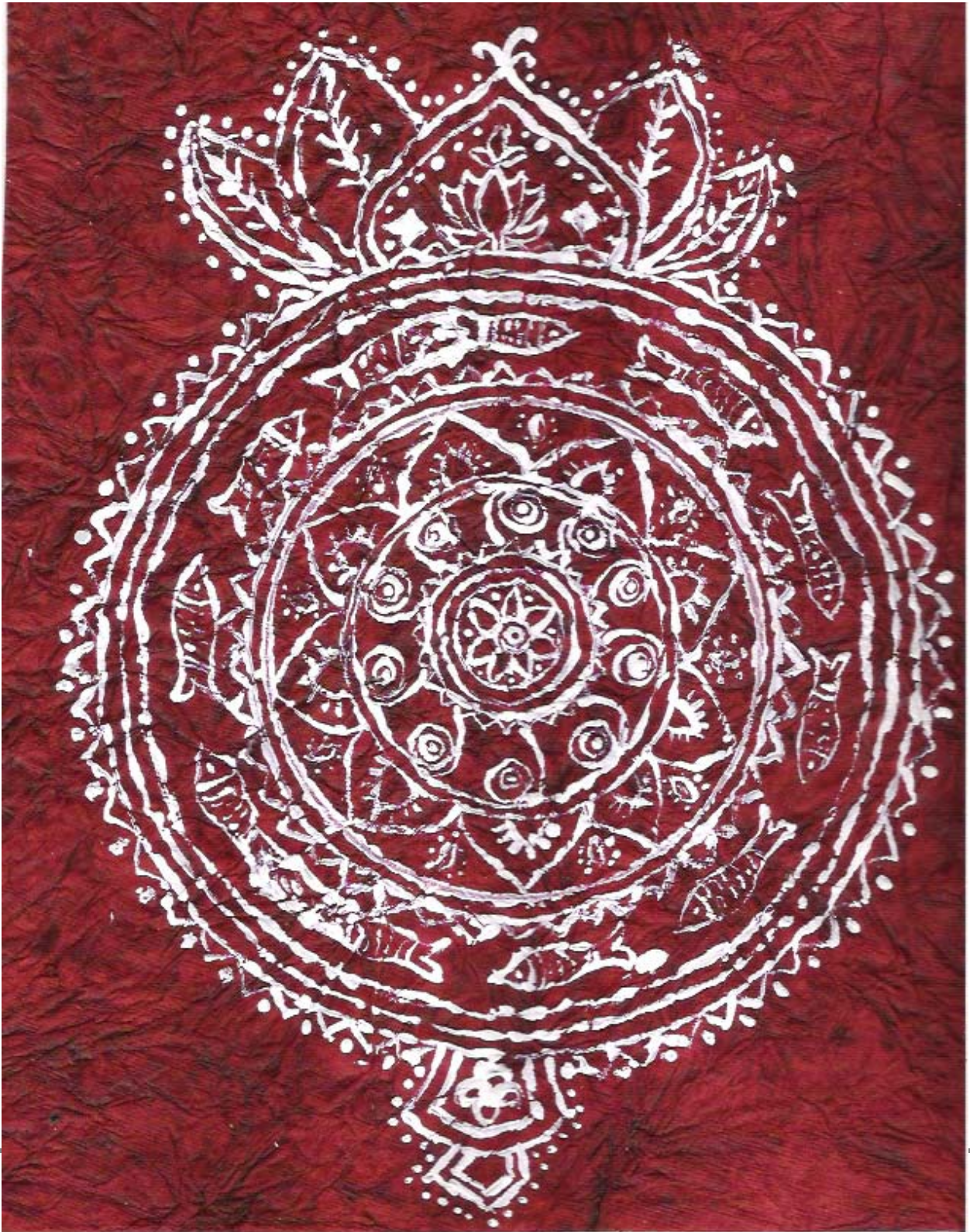
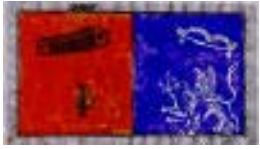
दशपात खरिपन



कन्याक झुलन,कान छेदन खा' रिराहक खरसब पब हनदेरताक
घब खाकि मलप पब रँनाउन जागत खछि ।

रँनेरौक- रिधि । एकब रँनेरौक रिधि सूझ्म खछि ।

डुपबमे तीन पातक प्खस, ,ओकबनीचा पाँच-पातक कमन-
प्खस,ओकब नीचाँ सात-पात हकतु कमन, रीचमे खण्डन कमन
खछि । दश पात चाक दिशि खछि । नौ ठाँ माँछक चित्र सेहो
खछि ।





8. संगीत शिक्षा

(थाँगा)

थाँग- एकठा सप्तकमे सात शुद्ध, चाबिठा कोमन था' एकठा तीब्र स्वर (12 स्वर) होगत छ्छि । एहिमे सात स्वरक ओ' सङ्गदाय, जेकवासँ कोनो बागक उपेति होगत छ्छि, तकवा थाँग रा मेन कहन जागत छ्छि ।

थाँग बागक जनक छ्छि, थाँगमे सात स्वर होगत छ्छेक(संपूर्ण जाति) ।

थाँगमे मात्र थारोही स्वर होगत छ्छि ।

थाँगमे एकहि स्वरक शुद्ध था' रिप्रात स्वर संग-संग नहि बहैत छ्छि । रिभिन्न बागक नाम पव थाँग सभक नाम बाखन गेन



खुच्छि ।

खाँठक सातो ठाँ सुब फ़मान्साव होगत खुच्छि खाँ एहिमे गेयता नहि होगत छैक ।

खाँठक 10 ठाँ खुच्छि ।

1. खाँसारवी-सा रे ग॒ म॒ प॒ ध॒ नि॒
2. कन्याण-सा रे ग॒ म॑ प॒ ध॒ नि॒
3. काहली-सा रे ग॒ म॒ प॒ ध॒ नि॒
4. खमाज-सा रे ग॒ म॒ प॒ ध॒ नि॒
5. पूर्री-सा रे॒ ग॒ म॑ प॒ ध॒ नि॒
6. रिनारन-सा रे ग॒ म॒ प॒ ध॒ नि॒
7. भैबर-सा रे॒ ग॒ म॒ प॒ ध॒ नि॒
8. भैवरी-सा रे॒ ग॒ म॒ प॒ ध॒ नि॒
9. मावरा-सा रे॒ ग॒ म॑ प॒ ध॒ नि॒
10. तोड़ ी-सा रे॒ ग॒ म॑ प॒ ध॒ नि॒



रर्णः

(खनुरतते)

9. रानानां थते

एकार्णी

थपाना थानेया

पात्रः

थपाना: ऋगरैदिक ऋचाक नेथिका

थत्रि: थपानाक पिता

रैद्य 1,2,3:

थशास्त्रि: थपानाक पति ।

रेशभूषा



उत्तरीय रम्त्र (पुक्वष), रक्कन, जूहीक माना(खपानाक केशीमे),
दल्ल ।

मंच सज्जा

सहकाव-रुङ्ग(खामक गाछी),
रेदी, हरिआरु, वखक छिद्र, हगक छिद्र,
सोमाँमे साही, गोहि खा' गिवगाँ ठ ।

दुथ पाँच

(खपानाक पतिगृह । रूह माता-पिता रैसन छथिन्ह खा' खपाना
घबक काजमे नागन छथि ।)



खपाना: प्रिय प्रशोभि । एतेक दिन रीति गेन । पतिगृहमे हम कोनो नियंत्रणक खनुभर नहि कएनहुँ । हमबा प्रति खहाँक कोमन प्रेम सतत् रिद्यमान बहन । झूदा झेत श्रितक जे दाग हमबा पब झननु सत्राक कपमे खछि, कदाचित् रैह किछ दिनसँ खहाँक हृदयमे हमबा प्रति उदासीनताक कपमे पविणत भेन खछि ।

प्रशोभि: हमब उदासीनता खपाना ?

खपाना: हँ प्रशोभि । हम देखि बहन छी ङ पबिर्तन । की एकब कावण हमब ब्रगदोषमे खँतर्निहित खछि ?

प्रशोभि: हे खपाना । हमबा भीतब एकठा संघर्ष चनि बहन खछि । ङ संघर्ष खछि प्रेम खाँ रासनाक । प्रेम कहैत खछि, जे खपाना ब्रह्मरादिनी छथि, दिय नाबी छथि । झूदा रासना कहैत खछि, जे खपानाक शीवीक ब्रगदोष नेत्रमे कपसँ रैवाग्यक कावण रँनि गेन खछि ।

खपाना: प्रकषक हाथसँ म्त्रीक ङा भर्सेना । कामनासँ कब्रुषित प्रकष द्वावा नाबीक हृदय-प्रस्पकेँ खकूचरँ छी ङा । हम र्देक खध्यन कएने छी । चन्द्रमाक प्रकाशिक रीचमे ओकब दाग नुका जागत खछि, झूदा हमब ङा झेत श्रित दाग हमब रिशान ग्णवाशिक रीचमे नहि मेठायन ।

(प्रशोभि सुछँ भय जागत छथि, झूदा किछ रँजेत नहि छथि ।)

खपाना: मरँन प्रकषक सौँना हम खपन हावि मानैत, खपन



पिताक तपोरन जा बहन छी, प्रशशि ।

दृष्ट 6

(अपाना प्रातः कानमे समिधामँ अग्निहृन्दमे होम करैत अन्द्रक पूजा आ' जपमे नागि गेन छथि । अशोसन पब रैसन छथि ।)

अपाना: धावक नग सोम भेटैत, ओकवा घब आनन आ' कहन जे हम एकवा अहचरँ अन्द्रक हेतु, शिकक हेतु । गृह गृह घुमेत आ' सभठा देखैत, छोट अष्टीक आ सोम पीरू,दाँतसँ अहचन, अन्न आ' दहीक संग खेनागमे अशिसा गीत सुनैत । हम सभ अहाँकेँ नीक जेकाँ जनराक हेतु अरैकम्पिक कपसँ नागन छी, अदा का गोठे अहाँकेँ प्राप्त नहि क' सकन छी । हे चन्द्र, अहाँ आस्तु-आस्तु आ' निबन्ध ठोपे-ठोपे अन्द्रमे अराहित होडु । की ओ' हमवा लोकनिक सहायता नहि कबताह, हमवा लोकनिक हेतु कार्य नहि कबताह । की ओ' हमवा लोकनिकेँ धनीक नहि रँनओताह ? की हम अपन राजासँ शत्रुताक राँद आरँ अपना सभकेँ अन्द्रसँ मिन निअ । हे अन्द्र अहाँ तीन ठाम उँपेन कक । हमवा पिताक मस्तक पब, हनकव खेतमे आ' हमव उँदव नग । एहि सभ अमिनकेँ उँगय दियोक । अहाँ हमवा सभक खेतकेँ जोतनहुँ,



হমব শীবীবকেঁ খা' হমব পিতাক মস্তুককেঁ সেহো । খপানাকেঁ
পরিব্র কএন । গন্দ্র ! তীন রেঁব, এক রেঁব পহিয়া নাগন গাড়ী,
এক রেঁব চাবি পহিয়া হুকত্ত গাড়ীমে খা' এক রেঁব দ্বনু রঁবদক
কান্হ পব বাখন হগক রীচ । হে শিতক্রত্ত ! খা' খপানাকেঁ স্রুচ
কএন খা' সূর্যসমান হ্রচা দেন । হে গন্দ্র !

দৃশ্য 7

(মহাযজ্ঞক সমাপ্তিক পশ্চাত ব্রহ্মাদয়ক দৃশ্য ।)

খত্রি: এহি রিশান ঋত্বিজগণক মধ্য ঋকক মন্ত্রমে খপানাক ঋচাকেঁ
হম সম্মিনিত কএ সকেঁত ছী, কাবণ গা স্রুত: স্রুষ্টিত খা'
খভিমন্ত্রিত খছি । খপানাক চর্মরোগ এহিসঁ ছুষ্টি গেন, একব গা
সদ্য: প্রমাণ খছি । খপানা এহি মন্ত্রক দৃষ্ট্যা ছথি ।

ঋষিগণ: খত্রি, হমবা সভ সেহো এহি মন্ত্রক দর্শন কএন ।
খহো । সম্মিনিত কবরীক খা' নহি কবরীক তঁ শ্রম্হ নহি খছি ।
গা তঁ খাগসঁ ঋকক ভাগ ভেন ।

(এহি স্রীপ্ৰতিক রীদ ব্রহ্মাদয় সভামে দোসব কাজ সভ শ্রাবম্হ ভ'
জাগত খছি । প্ৰশীশ্রি রিচনিত মোনে খপানাক সোনাঁ খরৈত



छथि ।)

प्रशान्ति: खपाना । हम दुःखित छी । खहाँक रियोगमे ।
खपाना: हे प्रशान्ति । गन्दक देन अ ब्रुचा योगक परिणाम
अछि । खहाँक उपेक्षा हमबा एहि योग्य रनेनक, झुदा खरि एहि
पब खहाँक कोनो अधिकार नहि ।

(दनु गोठे शिने: -शिने: मँचक दू दिशि सँ रहबाए जागत
छथि ।)

(पठाम्फेप)_

10. पंजी प्रबंध

पञ्जी संग्राहक-श्री रिद्यानन्द ना"मोहनजी"
पंजीकार



श्री रिद्यानन्द ना पञ्जीकार 'मोहनजी' जन्म-09.04.1957, पल्लुखा, ततेन,
ककरोड़(मधुबनी), बशोढय(पूर्विया), शिरनगब (खबबिया) आ सम्प्रति पूर्विया । पिता नङ्ग द्यौत पञ्जीशिक्ष



मार्तण्ड पञ्जीकाव मोदानन्द मा, शिरनगव, खबबिया, पूर्णिया। पितामह-सु. श्री भिथिया मा, पञ्जीशीम्बक दस र्ष धवि 1970 ङा.सँ 1979 ङा. धवि खधायन,32 र्षक रयससँ पञ्जी-प्रर्र्धक संरर्हन आ' संवम्भणमे संलग्न। प्रति- पञ्जी शाखा प्रसुकक निप्यातवण आ' संरर्हन- 800 पृगसँ अधिक थकन सहित। पञ्जी नगवमिक निप्यातवण ओ' संरर्हन- नगलग 600 पृगसँ ङुपव(तिवहता निपिसँ देरनागरी निपिमे)। ग्वक- पञ्जीकाव मोदानन्द मा। ग्वक ग्वक- पञ्जीकाव भिथिया मा, पञ्जीकाव निवसू मा प्रसिद्ध रिश्रिनाथ मा- सौवाठ, पञ्जीकाव नूठन मा, सौवाठ। ग्वक शोमवार्थ पवीम्भा- दवभंगगा महाबाज ह्माव जीरेश्रिव सिंहक यत्रापरीत संस्कारक खरसव पव महाबाजाधिवाज(दवभंगगा) कामेश्रिव सिंह द्वावा आयोजित पवीम्भा-1937 ङा. जाहिमे म्थिक पवीम्भाक ह्मा पवीम्भक म.म. डॉ. सब गंगानाथ मा छनाह।

श्रात्रिय ब्राह्मण सात श्रेणीमे ह्मर्र्ह छथि, आ' योग्य एरम् रंशज पन्दह श्रेणीमे। पञ्जीक संख्या 209 थछि, जाहिमे 56 पंजी श्रात्रिय आ' 153 पंजी योग्य आ' रंशजक थछि।

पंजी-प्रर्र्हक प्रावम्भ बाजा हवसिंहदेरक कानमे शुक भेन। ज्यातिवीश्रिव ठाहबक रर्ण-वनोकवमे हवसिंहदेर नायक थकि बाजा छनाह।

आग कान्हि पञ्जी-प्रर्र्ह मात्र मैथिन ब्राह्मण आ' कर्ण-कायशुक मध्य रिद्यमान थछि। ह्मा प्रावम्भमे ङा म्भ्रिय(प्रयः गंधरबिया बाजपूत)केव मध्य सेहो छन।

रर्णवनोकवमे 72 बाजपूत ह्मक मध्य 64 केव रर्णन थछि, जाहिमे रँएस आ' पमाव दोहवाउन थछि। दोसव ठाम 36 बाजपूत ह्मक रर्णन थछि। 20 ठा नामक पूर्र्हमे चर्च थछि।



रिद्यापतिक निखनारनीमे, जे प्रायः हुनकब नेपाल प्रवासक क्रममे निखन गेन छन, चन्दन खा' चौहानक रर्णन छति ।

गाहनराव रा मिथिनाक गंधरबिया बाजपूतक दू ठा शिखा मिथिनामे छन, भीठ भगरानपुव खा' पंचमहना(सहसा, पूर्णियाँ) ।

गंधरबिया, पमाव, रिशौराव, कंचिरान, चौहान खादि मिथिनाक महत्त्वपूर्ण बाजपूत छथि । झुदा गंधरबिया मिथिनामे महत्त्वपूर्ण छथि खा' एखनहु मधुर्नीसँ सहसा-पूर्णियाँ धरि छथि ।

रर्णनोकबक बाजपूत हनरर्णनक निम्न नगलग 62 ठा हन छति ।

सोमरंश, सूर्यरंश, डोडा, चोसी, चोना, सेन, पान, यादर, पामाव, नन्द, निरुम्भ, पुष्पभूति, शिंगाव, खबहान, गुपनबन्माव, सुबकि, शिखर, रायेकराव, गान्हराव, सुवराव, मेदा, महाव, रात, कून, कछराह, रायेशी, कबझा, हेयाना, छेरावक, छविधिज, भोन्ड, भीम, रिन्हा, पुन्डीबयन, चौहान, छिन्द, छिकोव, चन्दन, चन्की, कंचिरान, बान्चकान्ठ, झुडोठ, रिकोत, गुनहोत, चांगन, छहेना, भाठी, मनदत्ता, सिंहरीबभाला, खाती, बघुरंश, पनिहाव, सुवभाँच, गुमात, गांधाव, रर्धन, रहहोम, रिशिश्र, गुठिया, भाद्र, खुवसाम, रहतुवी खादि ।

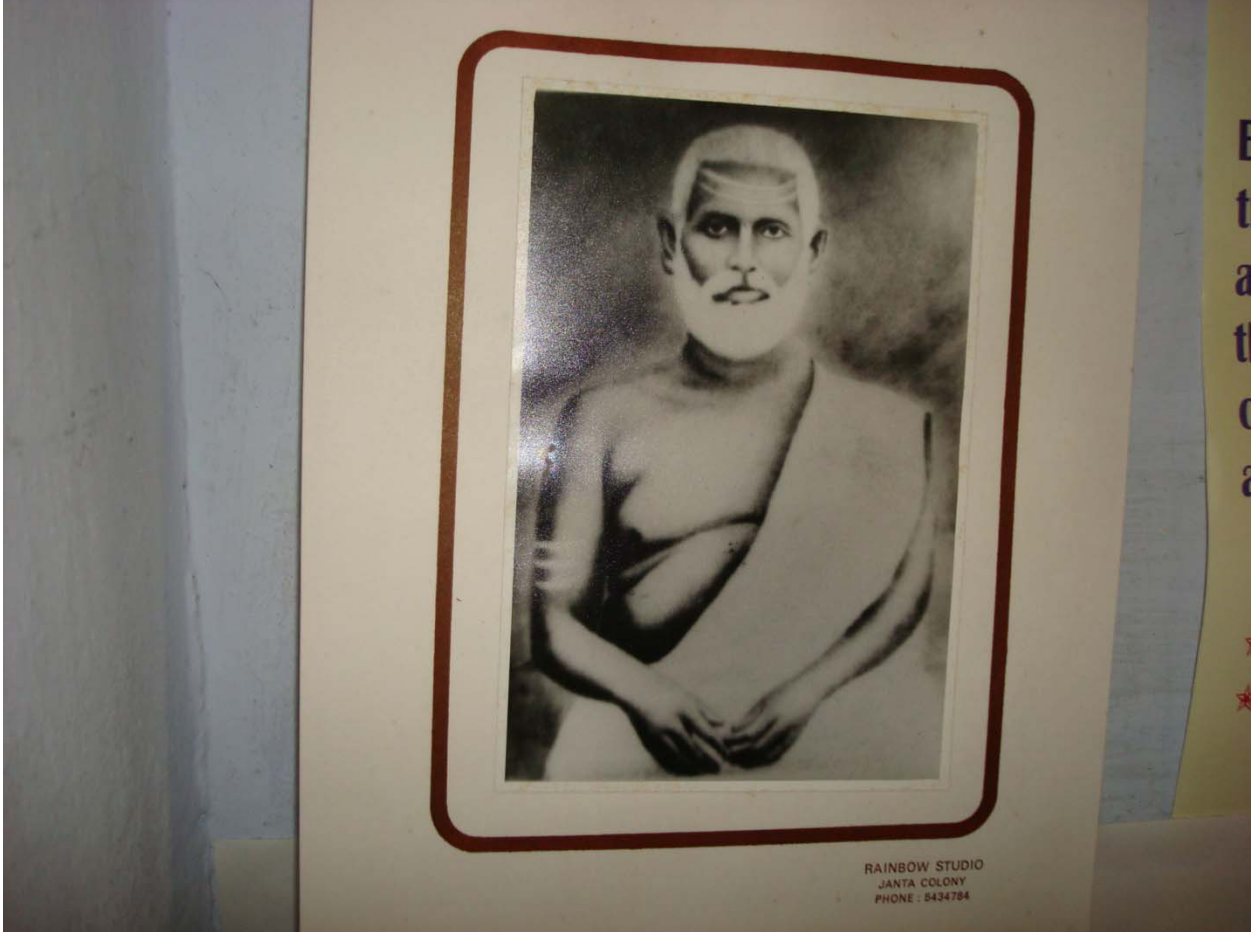
एखनो गंगा दियावामे बाजपूत खा' यादर दूनूक मध्य 'रनोत' होगत छथि, खा' दूनूमे रहुत घनिष्ठता छति ।



परतमे बहनिहाव खा' रनमे बहनिहावक रर्णन सेहो खड्डि रर्ण
बनोकबमे । जनक बाजाक रिबद ज(कर्रीना) सँ रँनन श्रतीत
होगत खड्डि ।

(खबरतते)

11. मिथिना खा' संस्कृत(सरतंत्रस्त्रतंत्र रँचा
नाक जीरनी-दोसब भाग)



सरतंत्र स्रतंत्र श्री धर्मदत्त मा(रँचा मा) (1860 ङा.-1918 ङा.)

महाबाज नम्मीश्रिव सिंहक सिंहासनारोहणक रँहृत दिन रँाद धवि धौत पवीम्का नहि भेन छन। ङा पवीम्का दवभंगा बाजक संस्थापक श्री महेशे ठाकुर द्वावा प्राबन्ध कएन गेन छन खा' एहिमे मौथिक पवीम्का द्वावा श्रेष्ठ पंडितक चयन कएन जागत छन।



महाबाज बमेश्वर सिंह एकब आयोजन करैत छन्हि आ' श्री गंगानाथ न्नाकेँ एकब दायिब देन गेल । श्री गंगानाथ न्ना परीक्षार्थीक रूपमे सेहो आरेदन कएने छनाह । महाबाज परेष्कार हेतु निखित पञ्चतिक आदेशे देने छनाह । प्रथिक निहकतु तेनाह श्री रँचा न्ना आ' श्री शिर क्कमार मिश्र । आ' दू गौठे किनष्ट प्रथिक आ' प्रपण परीष्कार मानन जागत छनाह । झुदा ताहि पर श्री गंगानाथ न्नाकेँ 200 मे 197 थक तेठेनहि । महाबाज पुरान परम्पराक अनुसार हिनका धोती तँ देनखिन्ह, झुदा नरीन पञ्चतिक अनुसार दूशाना नहि देनखिन्ह, कावण संस्कृतक रिद्वान होयतहूँ श्री गंगानाथ न्नाक न्नुकार थंग्रेजी दिशि छन ।

श्री रँचा न्ना प्रकाल पण्डित छनाह । महाबाष्ट्र आ' काशीक पण्डितक प्रसंगमे ओ' कहैत छनाह जे शिष्ट खलक प्रसंगमे ओ' सभ किछ नहि जनैत छनाह । ओहि समयमे महामहोपाध्याय दामोदर शिम्त्री काशीक एकठा प्रसिद्ध रैयाकवण छनाह । रिद्वान नौकनिक स्वनार पर दबडंगा महाबाज गुरुधाममे एकठा पण्डित सभक आयोजन कएनहि । एहिमे हथुआ महाबाज रिशिष्ट अतिथि छनाह । काशीक सभ प्रमुख रिद्वान एहिमे उपस्थित छनाह । प्रतियोगी छनाह पं.रँचा न्ना आ' म.म. दामोदर शिम्त्री भवद्वाज । निर्णायक छनाह पं.कैनाशि शिरोमणि भड्वाचार्य आ' म.म.पं शिर क्कमार मिश्र ।

एकठा सबन समझासँ शिम्त्रार्थ प्राबन्ध तेन । एकब नैयायिक



पम्फ नेनन्हि रँछा ना था' र्याकवण पम्फ पंदामोदव शोम्त्री ।

दामोदव शोम्त्री थपन जुरारँ थवंत सबन शोद्धमे रैयोकवणिक
थाधाव पव द' देनन्हि । थारँ रँछा नाक रँव थायन । रँछा ना
गहन पविष्काव प्राबन्ध कएनन्हि । रिद्वान लोकनिमे रिराद भेनन्हि
जे हुनकव प्रश्न प्रासंगिक छन्हि रा नहि । निर्णायक लोकनि एकवा
प्रासंगिक मानन्हि । जौँ-जौँ रँछा ना थागू रँढत गेनाह
हुनकव उतुव दामोदव शोम्त्री था' निर्णायक लोकनिक हेतु
थरौधगम्य होगत गेनन्हि । मध्य बात्रि तक ङा चनन । थन्तुतः
थनिर्णीत बाथि कए सत्ता रिमर्जित भेन ।

12. भाषा था' प्रीद्यागिकी

मागफासॉथरँ रडसँ pdf मे परिवर्तनक सोम्य तबीका थद्धि,
हागन,प्रिठमे जाडु, था' हेव प्रिठवमे एफारैठ डिस्प्रीनव सेनेकठ



कए प्रिंठ कमांड बदय दिख । झूदा एहिमे कখনो कान pdf डाँक्यूमेंट नहि रनेत छैक । तखन प्रिंठब एफारैठ डिस्ट्रीनब सेनेकठ कए प्रापर्टीज मे जाडु । ओतय थडोर pdf सेटिंग सेनेकठ कक । ओतय ऑपशिन डू नाँठ सेड फॉन्ट्स ठू डिस्ट्रीनब मे ठिक नगायन होयत । ओकबा खनचेक कक । था ओके कए राहब थाडु था प्रिंठ कमांड दिख । थारि pdf डाँक्यूमेंट रनि जायत ।

<http://www.bhashaindia.com> पब tbi | converter साँखठरेयब डाउनलोड कक । यदि मंगन फॉन्टमे थान फॉन्टसँ परिवर्तन कबरौक थछि तँ डाँक्यूमेंट .doc सेनेकठ कक जनपुठ भाषामे हिन्दी था' ascii फॉन्टमे फॉन्ट सेनेकठ कक । थाडुठपुठमे भाषा हिन्दी था' फॉन्ट Uni code mangal सेनेकठ कक । थारि ब्रॉडज क' कय फागन सेनेकठ कक । यदि थहाँक कम्प्युटर मे ऑफिस 2007 थछि था' रड डाँक्यूमेंट .docx एकसुंशिन थछि , तखन एकसुंशिनकेँ विनेम कक .doc थारि ब्रॉडजमे डाँक्यूमेंट थारि जायत । कंरठ ठागप कक । नूतन फागन Uni code Mangal फॉन्टमे रनि जायत ।



यदि अहाँक रड दॉक्यूमेन्ट हागनमे Uni code खा' asci i फॉन्ट मिक्र अछि, तखन अंदाजीसँ फॉन्ट asci i खा' रेशी प्रयाज होयरना asci i फॉन्ट चूज कक। कंरठ कक कन्नठ भ' जायत Uni code mangal font मे।

मूनभूत स्वर अछि- अ, ग, ङ, ऋ, नृ

एकवा समानाक्षर कहन जागत अछि।

दीर्घ स्वर अछि-आ, ङा, ङ, ऋ।

दीर्घ (मिश्र) स्वर अछि-ए, ए, ओ, औ। एकवा सन्ध्याक्षर कहन जागत अछि।

अ सभ संज्ञा पाणिनीपूर रैय्याकवण नोकनिक अछि।

सन्ध्याक्षर ए-स्व नहि होगत अछि, नृ दीर्घ नहि होगत अछि।

अ, ग, ङ, ऋ मे प्रत्येकक द्वास्व, दीर्घ(आ, ङा, ङ, ऋ) खा' प्लुत(आइङाइङुइऋइ) भेद भेन, तँ सभठा मिला कय १२ भेद भेन। नृ केव ए-स्व खा' प्लुत दृ भेद अछि। ए, ए, ओ, औ एकव सभक दीर्घ आइ प्लुत दृ-दृ भेद अछि। एहि प्रकारे २२ ठा स्वर भेन।



(खबरतते)

13. बचना निखरौसँ पहिने... (खाँगा)

हाथक झुदा 1.1. ठुँठा(प्रथम खाँगब)-एक यर दूरी पब

2.2. ठुँठा प्रथम खाँगबकेँ छरैत

3.3. ठुँठा रीच खाँगबकेँ छरैत

4.4. ठुँठा चाबिम खाँगबकेँ छरैत

5.5. ठुँठा पाँचम खाँगबकेँ छरैत

6.11. छठम फुँछ ठुँठा प्रथम खाँगबसँ दू यर दूरी पब

7.6. सातम खतिश्रब सामरेद

8.7. खलिगीत ऋद्धद



ग्रामगेयगान- ग्राम था' सार्वजनिक स्थान पव गाउन जागत छन ।
खावण्यकगेयगान- रन था' परिव्र स्थानमे गाउन जागत छन ।

डुहगान- सोमयाग एरं विशेष धार्मिक खरसव पव । पूरार्चिकसँ
संरंधित ग्रामगेयगान एहि रिधिँ ।

डुहगान थाकि बहस्यगान- रन था' परिव्र स्थान पव गाउन जागत
थछि । पूरार्चिकक खावण्यक गानसँ संरंध ।

नावदीय शिक्षामे सामगानक संरंधमे निर्देशी:-

1.स्रव-7

ग्राम-3

मूर्छना-21

तान-49

सात ठाँ स्रव सा,रे,ग,म,प,ध,नि, था' तीन ठाँ ग्राम-मध्य,मन्द,तीव्र ।

$7*3=21$ मूर्छन ।

सातू स्रवक पवस्रव मिश्रण $7*7=49$ तान ।

श्रुगरेदक प्ररक मंत्र गौतमक 2 सामगान(पर्कक) था' काशुपक 1
सामगान(पर्कक) कावण तीन मंत्रक रँवारँव भ' जागत थछि ।

मैकडॉरेन गन्द्राग्नि,मित्रारकणौ,गन्द्रारिष्णु,खग्निषोमौ एहि सभकेँ



ह्यगनदेरता माननन्हि अछि । झुदा ह्यगनदेर अछि –रिशेषण–
रिपर्यय ।

रेदपाठ–

१.संहिता पाठ अछि शुद्ध कपमे पाठ ।

अग्निमीळते प्ररोहित य्घाम्देरमिज्म । होताबवने
धातमम् ।

२. पद पाठ– एहिमे प्रत्येक पदके पृथक कए पठन जागत
अछि ।

३.क्रमपाठ– एतय एकक रौद दोसब, हेब दोसब तखन तेसब,
हेब तेसब तखन चतुर्थ । एना कए पाठ कएन जागत अछिह ।

४. जटापाठ– एहिमे जेँ तीन टा पद क, ख, खा ग अछि तखन
पढरौक क्रम एहि कपमे होयत ।

कख,खक,कख,खग,गख,खग ।

५.घनपाठ–एहि मे डुपबका उदाहरणक अनुसारे निम्न कप होयत–
कख,खक,कखग,गखक,कखग ।

७.माना,१.शिखा,+.रेखा,९.झुज,१०.दुन्द,११.बथ । अतिम आठकेँ
अष्टरिपति कहन जागत अछि ।



साम रिकारब सेहो 6 ठाँ खच्छि, जे गानकेँ ध्यानमे बथेत घष्ठाउन, रँढ १०न जा सकेत खच्छि ।

- 1.रिकारब- खल्लकेँ ओग्लाय ।
- 2.रिल्लेषण- शिछ्छ/पदकेँ तोड़नाग
- 3.रिक्कषण-सुबकेँ खिचनाग/अधिक मात्राक रँवारँव रँजेनाग ।
- 4.खल्लाम- रँव-रँव रँजनाग ।

5.रिबाम- शिछ्छकेँ तोड़ि कय पदक मध्यमे 'यति' ।

6.सुताभ-खानाप योग्य पदकेँ जोड़ि नेरँ ।

कौथुमीय शीखा 'हाड', 'बाग' जोड़ित छथि ।

बाणानीय शीखा 'हार', 'बाघि' जोड़ित छथि ।

मैथिलीक मानक लेखन-शीली

1. जे शिछ्छ मैथिली-साहित्यक प्राचीन कानसँ आग धरि जाहि रँठनीमे प्रचलित खच्छि, से सामान्यतः ताहि रँठनीमे निखन जाय- उदाहरणार्थ-

ग्राम

अग्राम

एथन

अथन, अथनि, एथेन, अथनी



ठाम

ठिमा, ठिना, ठमा

जकब, तकब

जेकब,

तेकब

तनिकब

तिनकब । (त्रैकल्पिक कर्पे ग्राह्य)

खड्डि

ईड्ड,

खहि, ए ।

2. निम्नलिखित तीन प्रकारक कप त्रैकल्पिकतया खपनाउन जाय:
भ गेन, भय गेन रा भए गेन ।
जा बहन खड्डि, जाय बहन खड्डि, जाए बहन खड्डि ।
कब' गेनाह, रा कबय गेनाह रा कबए गेनाह ।
3. प्राचीन मैथिलीक 'न्ह' ध्वनिक स्थानमे 'न' निखन जाय सकैत
खड्डि यथा कहननि रा कहनन्हि ।
4. 'ए' तथा 'ओ' ततय निखन जाय जत' स्पष्टतः 'खग'
तथा 'खड्ड' सदृश उच्चारण गण्ट हो । यथा- देखेत, छनैक,
रौखा, छोक गवादि ।



5. मैथिलीक निम्नलिखित शिद्ध एहि कसे प्रयुक्त होयत:
जैह,सैह,गएह,उएँह,नैह तथा दैह ।
6. ए-स्र गकारांत शिद्धमे 'ग' के वृत्त कवरँ सामान्यतः अग्रह्राह थिक । यथा- ह्राह देखि आरँह, मानिनि गेनि (मन्वष्य मात्रमे) ।
7. स्वतंत्र द्रस्र 'ए' रा 'य' प्राचीन मैथिलीक उँह्रवण आदिमे तँ यथारत बाखन जाय, किंतु आधुनिक प्रयोगमे रैकल्पिक कसे 'ए' रा 'य' निखन जाय । यथा:- कयन रा कएन, अयनाह रा अएनाह, जाय रा जाए गलादि ।
8. उँचावणमे दू स्वबक रीच जे 'य' ध्वनि स्वतः आरि जागत अछि तकरा नेखमे स्थान रैकल्पिक कसे देन जाय । यथा- धीआ, अँहँआ, रिखाह, रा धीया, अँहँया, रियाह ।
9. सान्नासिक स्वतंत्र स्वबक स्थान यथासंभर 'ए' निखन जाय रा सान्नासिक स्वब । यथा:- मैएण, कनिएण, किवतनिएण रा मैआँ, कनिआँ, किवतनिआँ ।



10. कावकक रिभक्तिउक निम्ननिथित कप त्राहः-

हाथकेँ, हाथसँ, हाथेँ, हाथक, हाथमे ।

'मे' मे खनुस्राव सरखा बाज्य थिक । 'क' क रैकल्पिक कप 'केव' बाखन जा सकैत छि ।

11. पूरकानिक फियापदक रौद 'कय' रा 'कए' खर्यय रैकल्पिक कपेँ नगाउन जा सकैत छि । यथा:- देखि कय रा देखि कए ।

12. माँग, भाँग खादिक स्थानमे माँ, भाँ गवादि निखन जाय ।

13. खरुँ 'न' ओ खरुँ 'म' क रौदना खनुसाव नहि निखन जाय(खपरौद-संसाव संसाव नहि), किंतु छापक सुरिधार्थ खरुँ 'ँ' , 'ँ', तथा 'ँ' क रौदना खनुस्रावो निखन जा सकैत छि । यथा:- खरुँ, रा खरुँक, खरुँन रा खरुँचन, कण्ठ रा कण्ठ ।

14. हनंत चिह्न नियमतः नगाउन जाय, किंतु रिभक्ति संग खकावांत प्रयोग कएन जाय । यथा:- श्रीमान्, किंतु श्रीमानक ।



- 15.सभ एकन काबक चिह्न शिद्धमे सठा क' निखन जाय, हठा क' नहि, संयुक्त रिभञ्जिक हेतु ह्वाक निखन जाय, यथा घब पबक ।
- 16.खन्ननासिककेँ चन्द्ररिन्दू द्वारा रञ्ज कयन जाय । पबंतु ह्वाक स्वरिधार्थि हि समान जठिन मात्रा पब खन्ननाबक प्रयोग चन्द्ररिन्दूक रँदना कयन जा सकैत अछि । यथा- हि केव रँदना हि ।
- 17.पूर्णा रिबाम पासिसँ (।) सूचित कयन जाय ।
- 18.समस्त पद सठा क' निखन जाय, रा हागफेनसँ जोड़ि क' , हठा क' नहि ।
- 19.निख तथा दिख शिद्धमे रिक्काबी (२) नहि नगाउन जाय ।
- 20.

घ्राह
ख्वाह

1. होयरँना/होरँयरँना/होमयरँना/
हेम'रँना
होयरँक/होएरँक

हेरँ'रँना,



2. खा/खाह खा
3. क' जेने/कह जेने/कए जेने/कय जेने/
न'/नह/नय/नए
4. भ' गेन/भह गेन/भय गेन/भए गेन
5. कब' गेनाह/कबह गेनाह/कबए गेनाह/कबय गेनाह
6. निख/दिख
निय',दिय',निख',दिय'
7. कब' रँना/कबह रँना/ कबय रँना करै
रँना/क'ब' रँना
8. रँना
रना
9. खाँन
खाँन
10. प्रायः
प्रायह
11. दूः थ
दूथ



12. चनि गेन

चन गेन/चैन गेन

13. देनखिन्ह

देनकिन्ह, देनखिन

14. देखनन्हि

देखननि/ देखनैन्ह

15. छथिन्ह/ छनन्हि

छनैन्ह/ छननि

छथिन/

16. चनैत/दैत

चनति/दैति

17. एखनो

खखनो

18. रँढन्हि

रँठन्हि

19. उ' / उ२ (सर्रनाम)

उ

20. उ (संयोजक)

उ' / उ२

21. हाँगी/हाग्नि

हागँग/हागँउ



22. जे

जे' / जे२

23. ना-नुकब

ना-नुकब

24. केनन्हि / कएनन्हि / कयनन्हि

25. तखन तँ

तखनतँ

26. जा' बहन / जाय बहन / जाए बहन

27. निकनय / निकनए नागन

रँहबाय / रँहबाए नागन

निकन' / रँहरी नागन

28. ओतय / जतय

जत' / ओत' / जतए / ओतए

29. की हूङन जे

कि हूङन जे

30. जे

जे' / जे२

31. कूदि / यादि (मोन पावर)

कूगद / यागद / कुद / याद

32. गहो / ओहो



33. हँसए/हँसय
हँस

34. लौ खाकि दस/लौ किंरा दस/लौ रा दस

35. सस्य-सस्यब
सस-सस्यब

36. छह/सात
छ/छः /सात

37. की
की/की२(दीर्घाकाबान्तुमे रर्जित)

38. जरौं
जरौं

39. कबएताह/कबयताह
करेताह

40. दनान दिशि
दनान दिशि

41. गेनाह
गएनाह/गयनाह



42. किड्ड खाव
किड्ड ँव

43. जागत छन
जाति छन/जेत छन

44. पहुँचि/भेठि जागत छन
पहुँच/भेठ जागत छन

45. जरौन(हरा)/जरान(होजी)

46. नय/नए क/क२

47. न/न२ कय/कए

48. एखन/अखने
अखन/एखने

49. अहीकेँ
अहीकेँ

50. गहीव
गहीव

51. धाव पाव केनाग
पाव केनाय/केनाए

धाव



52. जेकाँ
जेकाँ/जकाँ

53. तहिना
तेहिना

54. एकब
खकब

55. रँहिनउ
रँहनोग

56. रँहिन
रँहिनि

57. रँहिन-रँहनोग
रँहिन-रँहनउ

58. नहि/ले

59. कबरौ/कबरौय/कबरौए

60. त/त २
तय/तए

61. भाय
भै



62. भाँय

63. यारत

जारत

64. माय

मै

65. देखि/दएन्हि/दयन्हि

दन्हि/दैन्हि

66. द'द २/दए

(खबरतते)

14. प्ररामी मैथिन English मे



थ. VN Jha केव DO WE REALLY
EXI ST AS NATI ON

था. VI DEHA, M t hi l a, Ti r bhukt i ,
Ti r hut ...(थाँगा)

थ. VN Jha केव Globalization- Is it a boon or a
curse for the Maithils ?

हरि ॐ

By Vi ve kanand Jha

हरि ॐ



Globalization- Is it a boon or a curse for the Mithils ?

Globalization from intellectual perspective, simply connotes unleashing the western curses on India and simultaneously taking away the oriental virtues into the occidental world. Lamentably, hitherto, the western contagious disease of kissing the spouse at night and bidding good bye in the morning for ever, alas, has come to symbolize the status symbol of Indian aristocrats, even infiltrating the Mithils who remained, by and large, immune from this curse till before the advent of the so called the globalization of the world.

The western world, in its utter wisdom has never been short of inventing the lollypops for the lesser sons/daughters of the God - Orientals who invariably needed these lollypops for their survival. After India attained independence, she found herself being pushed to the soviet block, for the world at that time was bi-polar and India found the socialistic block of Soviet Union catering to its newly invented socialistic aspirations in contrast to capitalistic ideology propagated by the USA. However, Gorbachev presided over the funeral of the Soviet Union and thereby heralded the arrival of uni-polar world with a the lone superpower USA at the helm of the world's affairs. USA policy makers had to have some thing innovatively unique to make a quick inroad into the countries which, presumably it perceived, were opposed to its



hegemonistic world policy. Thus, came the mantra, a newly coined 'phrase' on the world horizon – globalization of the world – cutting across the countries and other men made barriers. USA and other western countries, riding on the wave of its strategically devised concept created a frenzy in the third world countries which, falling invariably prey as it always did to this western disseminated opium gullibly begun to believe that indeed the world has become one. In the name and banner of globalization, the USA and its crony western countries began terrorizing the third world countries to liberalize their economy or face a virtual isolation. The poor third world countries including India, had no option but to toe the western line and India opened its economy to its world. Was India adequately prepared for liberalization of its economy way back in 1991 is a debatable issue, but India in general and Mithils in particulars gained and lost in the wake of globalization can be summed up as below.

1. To start with the gains, India benefited from the large FDI (Foreign Direct Investment) inflows which could be productively invested in the economy resulting in the higher growth of GDP (Gross Domestic Product).
2. Indian IT sector experienced an unprecedented boom resulting in India's domination in the software industries. The nation as of today, can boast of having the vast pool of its IT software experts in the country. The rise of Infosys, Satyam Wpro, TCS etc. are the glowing tributes to the globalization of the Indian economy.
3. The outsourcing of jobs from USA and other western countries especially in BPO, KPO, LPO etc. has absorbed our



vast labor force and has immensely contributed to the growth of the service industries. However, only handful of Maithil youth have found their way into the BPO, KPO, LPO and the call centers for their gainful employment.

4. Nations economy has been consistently by growing by 9% which is undoubtedly a laudable achievement. However, how far this much touted and trumpeted economic growth has alleviated the cause of poverty itself remains a big question.

Now comes the losses:

1. Much vaunted FDI flow into Indian economy has utterly failed to do justice to the majority of Indian people. Mthilasthan (comprising of the districts like Darbhanga, Madhubani, Sitamarhi, Bettiah, Samasthi pur, Muzzafar pur, Begusarai, Mtihari, Kathiar, etc.) are yet to get even a penny of investments from the large pool of FDI which purportedly has come into India.
2. Boom in IT sector, albeit resulted in proving jobs to the educated Maithil youth, but the percentage of such youth is not even 1% of the total Maithil population. What the IT boom means to the vast 90% of our landless labor who still continue to run from pillar to post in search of their livelihood.
3. The outsourcing may have provided succor to the youth of other parts of the country, Maithils on accounts of lack of opportunities for English education, could not extract the amount of benefits which their counter parts from other parts of the country beneficially did. The apathetic attitude of the Bihar government to the vast area of the Mthilasthan which, thus far has remained bereft of any



meaningful educational institution, is the solitary cause for the lack of adequate English education.

4. Nation's economy might be consistently rising by 9% (approx.) but what about Maithils and their place? India may be trumpeting its economic achievement to the world, but its own constituent like Maithils are still stuck in abject poverty. Maithils seek an explanation from the government of India and Bihar, as to why no part of FDI was channelized towards the growth and development of its place? Are the Maithils only meant for leading of life of migratory birds who keep on searching from one place to another for the source of their livelihood? Do the Maithils have no right in the share of nation's FDI inflows and in nation's economic growth? Regrettably, the power – that – be is deliberately sowing a seed of dissension and rebellion in the nation's polity by canalizing the vast allocation of the funds to the different parts of the country, while keeping Mthila and Maithils neglected forever.

However, the biggest curse of globalization is the most pernicious western contagious disease afflicting the nation – even the Maithils who, by and large, were perceived to be immune from it, now seem to be engulfed by it – is the rampant divorce resulting in the breakup of the families. The virus of separation and divorce which, almost engulfed the western society, has now spread within India like a plague. The western attitude of kissing the spouse at night and bidding him/her good bye for ever in the early next morning has made a deep inroad into the Indian society including the Maithils. Maithil youth, exuding false pride in western education and getting alienated from their cultural roots, invariably fall prey to this western curse by bringing their sacred marital



relationship to an indecisive end. They forget the famous Maithil maxim "Marriage is a second birth to the couple". If the marriages are broken in a single fit of rage, what will happen to the society and to the nation? In Bhagvat Gita Arjuna says "If the war happens, men get killed and vast number of women left behind become corrupt. Because of women's corruption, varanshankra's (bastards) are born, and because of varnshankra the society and ultimately the nation become corrupts and loses its national character".

Globalization in that sense is like a war which corrupts those who are overwhelmed by its forces, become its greatest victim. Like Mahabharata globalization is also a war which is to be fought in a detached manner without ending up as its victims.

Jai Hind.

Jai Hind.

शा. VI DEHA, M t hi l a, Ti r bhukt i ,
Ti r hut ...(शाँगा)



Yaska criticises the Pada Pat ha of Sakal ya and there was cont est between Yaj naval kya and Vi dagdha Sakal ya, at the court of Janaka.The Chhandogya Upani shad and the Sat apat ha Brahmana narrate a story in which five great househol ders approach a seni or teacher and then these six deci de to go to Asvapati Kai keya to l earn about Vai svanara.

Svai dayana Saunaka defeat ed Uddal aka Ar uni . Ar uni became his pupi l.In the et hnographi c sect ion of the Indi an Museum at Amst er dam there is a Bal inese painting on a strip of l inen, depicting the famous Mahabharata story of Dhaumya and Uddal aka Ar uni .Svet I ket u was the son of Uddal aka Ar uni .He was a Gaut amā.The fai l ures on the part of Svet aket u, led to his the position of the Puro hit a of Kasi , Kosal a and Vi deha offered to Jal a Jat ukar nya and not to the son of Ar uni .Svet aket u was



expert ,however ,on matters of the duty the seventeenth priest . Yajnaval kya was a great scholar and exponent of Brahmi dya in the time of Janaka Vai deha. He was a pupil of Uddalaka Aruni .A large banyan tree at Jogban near the Kantaul Station of NE. Railway in Darbhanga district is adored as his hermitage. Shukla Yajurveda of Yajnaval kya is the great landmark between the post Vedic and the neo Vedic and later ages. Satyakama Jabala was the son of a slave girl by an unknown father. He was initiated as a Brahmacharin by Gautama Hari drumat a. Gargi Vachaknavi was a rival of Yajnaval kya and took part in the contest at the court of Janaka Vai deha.Maitreyi was one of the two wives of Yajnaval kya and insisted on learning the secret of immortality.The last two kings of the Janaka dynasty of Videha were Nimi II and Karala Janaka as per the



Jat akas.Ni mi II is said to have united his scattered family. The Mahabharata knows one Ni mi Vai deha gave his kingdom to the Brahmanas. Karala Janaka was the son of Ni mi II,having long projecting teeth. The Ni mi Jat aka says that Ni mi's son Kal ara Janaka brought his line to an end. Art hashast ra of Kauti lya mentions that Kar ala Vai deha perished along with his kingdom and relations for an attempt on a Brahmana mai den.

मिश्रि वडु